भाजपा में परिवारवाद पर दोहरा मापदंड, कांग्रेस में भी गहरी हैं भाई-भतीजावाद की जड़ें

सांसद-विधायक के टिकट पर दी एंट्री, यहां बैन

सच संवाददाता ॥ भोपाल

मध्यप्रदेश भाजपा संगठन ने हाल ही में जिला कार्यकारिणियों से नेताओं के परिजनों को हटाया, लेकिन विधानसभा और लोकसभा चुनाव के टिकट दिए। इसी के साथ पार्टी पर दोहरे मापदंड अपनाने के आरोप लग रहे हैं। कार्यकर्ताओं का कहना है कि यदि जिला स्तर पर परिवारवाद खत्म करने की पहल की गई है, तो यही नियम विधानसभा और लोकसभा टिकटों पर भी लागू होना चाहिए। मध्य प्रदेश भाजपा संगठन जिला स्तर पर कार्यकारिणी घोषित कर रहा है। इसमें पार्टी नेताओं के परिजनों को पदाधिकारी बना कर बाद में उनसे इस्तीफे लेने की बात कही जा रही है। इसे भाजपा एक परिवार, एक पद की नीति का कड़ा संदेश बताया जा रहा है। इसके उलट विधानसभा और लोकसभा चुनाव में तस्वीर उलट दिख रही है। कई पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व सांसद, पूर्व विधायकों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए उनके बच्चों और रिश्तेदारों को टिकट देकर चुनाव मैदान में उतारा गया। मध्य प्रदेश में वर्तमान में पति और पत्नी सांसद और विधायक हैं।

पति प्रदेश सरकार में मंत्री और पत्नी सांसद

मध्य प्रदेश के अलीराजपुर विधानसभा सीट से अनुसूचित जनजाति वर्ग से आने वाले नागर सिंह चौहान विधायक हैं। चार बार के विधायक नागर जनजाति वर्ग के बड़े नेता हैं। वे मध्य प्रदेश सरकार में अनुसूचित जनजाति कल्याण मंत्री हैं। भाजपा ने 2024 के लोकसभा चुनाव में सिटिंग सांसद गुमान सिंह डामोर का टिकट नागर सिंह चौहान की पत्नी अनीता नागर को दिया। अनीता नागर ने बड़े अंतर से चुनाव जाता और पहली बार सांसद बनीं। अब उनके परिवार में पति राज्य सरकार में मंत्री और पत्नी सांसद हैं।

बेटे की जगह पिता को दिया टिकट

2018 और 2023 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने दिग्गज नेताओं के रिश्तेदारों को टिकट दिया। 2018 में कैलाश विजयवर्गीय के बेटे आकाश विजयवर्गीय को इंदौर-3 से टिकट दिया गया। वह चुनाव जीत कर विधायक बने।

ससुर की जगह अब बहू विधायक

वहीं, पूर्व मुख्यमंत्री स्व बाबूलाल गौर की बहू कृष्णा गौर की भी राजनीतिक परिवार का फायदा मिला। कृष्णा गौर 2005 में मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम का अध्यक्ष बनाया गया और भोपाल महापौर भी रहीं। 2018 में कृष्णा गौर को उनके ससुर बाबूलाल गौर की जगह टिकट दिया गया।

दो पूर्व सीएम का बेटा और भतीजा विधायक

पूर्व मुख्यमंत्री स्व. सुंदरलाल पटवा के भतीजे और भोजपुर से विधायक सुरेंद्र पटवा भी लंबे समय से राजनीति में हैं। वे शिवराज सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं। वे 2008 में पहली बार विधायक बने थे। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री स्व. वीरेंद्र सखलेचा के बेटे ओमप्रकाश सखलेचा जावद से पांचवीं बार विधायक बने। वे शिवराज सरकार में मंत्री भी रहे।

इनको भी मिली विरासत में राजनीति

शहडोल से भाजपा सांसद हिमाद्री सिंह दूसरी बार लोकसभा पहुंची हैं। हिमाद्री सिंह के माता-पिता दलबीर सिंह और राजेशनंदिनी दोनों कट्टर कांग्रेसी हैं और सांसद रह चुके हैं। 2017 में हिमाद्री सिंह ने भाजपा नेता नरेंद्र मरावी से शादी की। इसके बाद भाजपा की सदस्यता ली और 2019 में उनको भाजपा ने लोकसभा का टिकट दे दिया।

दोहरे पैमाने से पार्टी में असंतोष

पार्टी कार्यकर्ताओं का कहना है कि जिला स्तर पर परिजनों को हटाकर परिवारवाद खत्म करने का संदेश दिया जा रहा है, लेकिन जब बात सांसद और विधायक टिकट की आती है तो परिवारवाद को नजरअंदाज कर दिया जाता है। इससे कार्यकर्ताओं के बीच असंतोष बढ़ रहा है। कार्यकर्ताओं का कहना है कि यदि पार्टी वास्तव में परिवारवाद खत्म करने के लिए गंभीर है, तो यह नीति सभी स्तरों पर लागू होनी चाहिए।

पार्टी को एक स्पष्ट नीति बनानी होगी

मध्य प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार प्रभु पटैरिया का कहना है कि यह पहल अच्छी है। भाजपा को अब स्पष्ट नीति बनानी होगी। यदि एक परिवार, एक पद का फॉर्मूला केवल जिला कार्यकारिणी तक सीमित रहा तो कार्यकर्ताओं के बीच असंतोष बढ़ सकता है।

यह भी बढ़ा रहे विरासत को आगे

- जबलपुर कैंट से विधायक अशोक ईश्वरदास रोहाणी के पिता ईश्वरदास रोहाणी मध्य प्रदेश विधानसभा के 2003 से 2013 तक स्पीकर रह चुके हैं।
- कटनी जिले के विजयराघवगढ़ से विधायक संजय पाठक कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुए। संजय के पाठक सत्येंद्र पाठक कांग्रेस सरकार में वर्ष 2000 में मंत्री रह चुके हैं।
- रीवा के सिरमौर से विधायक दिव्यराज सिंह के पिता पुष्पराज सिंह भी प्रदेश सरकार में मंत्री रह चुके हैं।

वारिसों को मिलता है टिकट या संगठन में पद

भाजपा के साथ ही कांग्रेस भी परिवारवाद को बढ़ाने में पीछे नहीं है। वर्तमान विधानसभा में करीब 20 विधायकों के पीछे उनके परिवारों की लंबी राजनीतिक विरासत है। एडीआर की रिपोर्ट के अनुसार मध्य प्रदेश कांग्रेस की मौजूदा विधानसभा टीम पर नजर डालें तो साफ झलकता है कि पार्टी भी राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाने में पीछे नहीं है। नए चेहरों की जगह ज्यादातर सीटों पर वही नेता टिके हैं, जिनके परिवार पहले से सत्ता या संगठन में मजबूत पकड़ रखते आए हैं। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि मध्य प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस दोनों आज भी वंशवादी राजनीति के घेरे में है। कई सीटों पर टिकट बंटवारे से लेकर संगठन की ताकत तक, सब कुछ पारिवारिक विरासत पर आधारित दिखाई देता है।

दो पूर्व सीएम के बेटे विधायक

सीधी के चुरहट से अजय सिंह विधायक हैं। वे पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के दिग्गज नेता स्व. अर्जुन सिंह के बेटे हैं। अर्जुन सिंह केंद्र सरकार में कई बार मंत्री भी रहे। वहीं, गुना के राघौगढ़ से विधायक जयवर्धन सिंह के पिता दिग्विजय सिंह प्रदेश के दो बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं और वर्तमान में कांग्रेस से राज्यसभा सांसद हैं। वहीं, पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ भी छिंदवाड़ा से सांसद रहे। उन्होंने 2024 का लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन हार का सामना करना पड़ा।

पूर्व केंद्रीय मंत्री के बेटे संभाल रहे विरासत

झाबुआ से डॉ. विक्रांत भूरिया विधायक हैं। उनके पिता कांतिलाल भूरिया रतलाम-झाबुआ से सांसद रहे और केंद्र सरकार में मंत्री भी रहे। वहीं, खरगोन के कसरावद से सचिन यादव विधायक हैं, उनके पिता सुभाष यादव प्रदेश सरकार में उपमुख्यमंत्री थे और उनके बड़े भाई अरुण यादव केंद्रीय मंत्री रह चुके हैं। बालाघाट की ब्यौहारी से कांग्रेस विधायक संजय उइके के पिता गनपत सिंह उइके कई बार विधायक रहे और कांग्रेस सरकार में मंत्री भी रहे।

सिंघार को भी विरासत में मिली राजनीति

खरगोन के भीकनगांव से कांग्रेस विधायक झूमा सोलंकी के रिश्तेदार जीवन सिंह पटेल कांग्रेस के पूर्व नेता रहे और रामपुर बघेलान विधानसभा सीट से 1989 से विधायक चुने गए। वहीं, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार भी परिवार की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। धार के गंधवानी से कांग्रेस विधायक उमंग सिंघार पूर्व उपमुख्यमंत्री स्व. जमुना देवी के भतीजे हैं। जमुना देवी 1962-67 में लोकसभा सदस्य थीं। इसके बाद 1978 में राज्यसभा की सदस्य भी बनीं। इसके बाद 1998 से 2003 तक मध्य प्रदेश की उपमुख्यमंत्री रहीं। हरदा के टिमरनी से कांग्रेस विधायक अभिजीत सिंह (अंकित बाबा) के अंकल संजय शाह (मकड़ई) भाजपा के सीनियर नेता रहे हैं। भाजपा के टिमरनी से विधायक रहे।

इनके पति रहे बड़े नेता

बालाघाट से विधायक अनुभा मुंजारे के पति कंकर मुंजारे तीन बार विधायक रहे और एक सांसद रह चुके हैं। उन्होंने 2024 में बसपा सीट से चुनाव लड़ा, लेकिन हार का सामना करना पड़ा। अलीराजपुर के जोबट से विधायक सेना के पति महेश पटेल दो बार विधायक और जिला अध्यक्ष रहे।

ये भी बढ़ा रहे पिता की विरासत आगे

भोपाल उत्तर से विधायक आतिफ अकील के पिता आरिफ अकील कांग्रेस के कद्दावर मुस्लिम नेता रहे और लंबे समय तक विधायक रहे। वह कांग्रेस सरकार में मंत्री भी थे। निवाड़ी की पृथ्वीपुर से कांग्रेस विधायक नितेंद्र सिंह राठौर के पिता ब्रजेंद्र सिंह राठौर पांच बार विधायक रहे और मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री भी रहे। छिंदवाड़ा के सौंसर से कांग्रेस विधायक विजय रविनाथ चौरे के पिता रेवानाथ चौरे सौंसर से 1990 में विधायक चुने गए थे। सतना के अमरपाटन से विधायक डॉ. राजेंद्र कुमार सिंह के पिता शिवमोहन सिंह वरिष्ठ पुलिस अधिकारी रहे थे। वे 1990 में विधायक चुने गए थे। दतिया विधानसभा सीट से राजेंद्र भारती के पिता श्याम सुंदर श्याम पांच बार दतिया से विधायक रहे।

पिता नेता प्रतिपक्ष, बेटा उप नेता प्रतिपक्ष

भिंड के अटेर से कांग्रेस विधायक हेमंत सत्यदेव कटारे के पिता सत्यदेव कटारे चार बार अटेर से विधायक रहे। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष भी रहे। सतना सीट से विधायक डब्बू सिद्धार्थ सुखलाल कुशवाह के पिता सुखलाल कुशवाह कांग्रेस के टिकट पर सतना से 1996-1998 में सांसद रहें। वहीं, सिवनी के केवलारी से कांग्रेस विधायक रजनीश हरवंश सिंह के पिता हरवंश सिंह केवलारी से विधायक रहे हैं। धार की कुक्षी सीट से कांग्रेस विधायक बघेल सुरेंद्र सिंह हनी के पिता प्रताप सिंह बघेल भाजपा के टिकट पर 2008 में विधायक बने थे। गुना की बमोरी से कांग्रेस विधायक ऋषि अग्रवाल के पिता कन्हैयालाल अग्रवाल 2008 में विधायक रहे और मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री भी चुने गए। बालाघाट की ब्यौहारी सीट से विधायक संजय उइके के पिता गनपत सिंह उइके कांग्रेस सरकार में मंत्री रहे।

मोहन भागवत ने की प्रहलाद पटेल पुस्तक नर्मदा परिक्रमा का विमोचन

कभी बंटे थे तो उन्हें भी मिला लेंगे

सच संवाददाता ॥ इंदौर

मध्य प्रदेश सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल ने नर्मदा परिक्रमा को लेकर एक पुस्तक लिखी है। जिसका विमोचन करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत इंदौर पहुंचे। उन्होंने पुस्तक का विमोचन करते हुए कई तरह की बातों का जिक्र किया है, जिसमें उन्होंने एक बात कही कि हम कभी नहीं बंटे, कुछ बटे थे तो उन्हें भी मिला लेंगे।मध्य प्रदेश सरकार के ग्रामीण एवं कृषि मंत्री प्रहलाद पटेल की पुस्तक नर्मदा परिक्रमा का विमोचन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संचालक मोहन भागवत सहित मुख्यमंत्री मोहन यादव, विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर और अन्य लोगों ने शिरकत की। इस अवसर पर प्रहलाद पटेल ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि 30 वर्ष पूर्व उन्होंने गुरुदेव की सेवा करते हुए नर्मदा परिक्रमा की थी। उस समय राजनीति से कोई संबंध नहीं था। केवल मां नर्मदा और गुरुदेव की कृपा से यह संभव हुई है। उसी के अनुभव को उन्होंने पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किया है।पटेल ने अपनी पुस्तक में बताया है कि, पर्यावरण और नदियों की रक्षा का संकल्प हर व्यक्ति को लेना चाहिए। असली सुख बाहरी साधनों से नहीं बल्कि भीतर की खोज से मिलता है। यही भारतीय संस्कृति की विशेषता है, जो विविधता में एकता का संदेश देती है।इसी कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पहुंचे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि दुनिया में झगड़ा इसलिए होते हैं क्योंकि लोग मैं और मेरा की भावना में बंधे रहते हैं।

सलकनपुर धाम में 22 सितंबर से भव्य मेला श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा पर विशेष ध्यान

सच संवाददाता ॥ सीहोर

सीहोर जिले में स्थित विजयासन देवी के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए सलकनपुर धाम में शारदीय नवरात्रि पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। आगामी 22 सितंबर से शुरू हो रहे नौ दिन के मेले में लाखों श्रद्धालुओं की उम्मीद है। इस वर्ष भी मेला स्थल पर व्यवस्था को पूर्णतः चाक-चौबंद किया गया है। कलेक्टर बालागुरू के. और एसपी दीपक कुमार शुक्ला ने सलकनपुर मंदिर परिसर एवं नर्मदा आंवलीघाट का निरीक्षण किया। उन्होंने मंदिर परिसर में बैठक आयोजित कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।कलेक्टर बालागुरू के. ने निर्देश दिए कि दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो। मंदिर परिसर में आगमन और निर्गमन की सुगम व्यवस्था के लिए पर्याप्त अधिकारी-कर्मचारी तैनात किए जाएं। फायर ब्रिगेड और इमरजेंसी सेवाओं की भी पूर्ण तैयारी रहे। मेला स्थल पर दुकानों को व्यवस्थित ढंग से लगवाने और बेहतर प्रबंध के निर्देश कलेक्टर ने दिए। प्रत्येक दुकानदार और स्टॉल का स्थान सुनिश्चित किया जाएगा ताकि भीड़ नियंत्रण और सुविधाओं में कोई बाधा न आए।

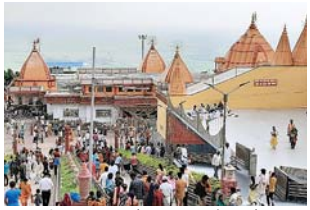

एसपी दीपक कुमार शुक्ला ने पुलिस अधिकारियों को सभी मुख्य स्थानों पर पर्याप्त बल तैनात करने के निर्देश दिए। ड्यूटी दौरान किसी भी स्थान पर यातायात बाधित होने पर तुरंत उसे सुचारु करने का निर्देश दिया गया। मंदिर में श्रद्धालुओं की सुरक्षा और निगरानी के लिए 200 से अधिक पुलिस बल तैनात रहेगा। मंदिर प्रांगण में रोपवे का निरंतर संचालन निश्चित किया जाएगा। कलेक्टर बालागुरु के. ने निर्देश दिए कि मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के लिए हेल्थ कैंप लगाए जाएं। आवश्यकतानुसार एंबुलेंस और मेडिकल स्टाफ को प्रमुख स्थानों पर तैनात किया जाएगा। ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता मिल सके। बाहर से आने वाली बसों और वाहनों के लिए अस्थायी बस स्टैंड बनाए जाएंगे। इससे सड़क मार्ग पर वाहनों का दबाव कम होगा और यातायात सुचारु रहेगा। कलेक्टर ने कहा कि बाहरी वाहनों के खड़े होने के लिए पर्याप्त स्थान सुनिश्चित किया जाए। मुख्य स्थानों पर हेल्प डेस्क बनाए जाएंगे। मंदिर परिसर में कंट्रोल रूम स्थापित किया जाएगा ताकि अधिकारी-कर्मचारी सतत संपर्क में रहें और किसी भी प्रकार की समस्या का तुरंत समाधान किया जा सके। श्रद्धालुओं के लिए पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था की जाएगी। मुख्य स्थानों पर अस्थाई शौचालय और चेंजिंग रूम भी स्थापित किए जाएंगे। इससे श्रद्धालुओं को सुविधा और आराम दोनों सुनिश्चित होंगे।

कलेक्टर और एसपी ने नर्मदा आंवलीघाट का निरीक्षण किया। घाट पर आने वाले श्रद्धालुओं के स्नान और पूजा कार्यक्रम व्यवस्थित ढंग से संचालित किए जाएंगे। पर्याप्त पार्किंग, बैरिकेडिंग, प्रकाश और बिजली आपूर्ति, अस्थाई शौचालय और सुरक्षा इंतजाम सुनिश्चित किए गए। कलेक्टर ने कहा कि श्रद्धालु स्नान के दौरान गहरे पानी में न जाएं। सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किए जाएंगे। घाट और मंदिर परिसर में सभी आवश्यक सुविधाओं को व्यवस्थित कर हर श्रद्धालु को सुरक्षित और सहज दर्शन-अर्चना का अवसर मिलेगा। इस वर्ष भी प्रशासन ने सुनिश्चित किया है कि मेले का संचालन सुचारू और व्यवस्थित हो। पार्किंग, यातायात, सुरक्षा, हेल्थ, पेयजल और साफ-सफाई सहित सभी व्यवस्थाओं का विस्तृत नियोजन किया गया। अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि किसी भी परिस्थिति में श्रद्धालुओं की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

क्लास में सोते नजर आए टीचर

सच संवाददाता ॥ छतरपुर

सरकारी स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था को शर्मसार करने वाला एक और मामला छतरपुर में देखने को मिला। यहां शिक्षक बच्चों को पढ़ाने की जगह खर्राटे मारते दिखाई दिए। शिक्षकों के सोने का यह कोई पहला मामला नहीं है। हाल ही में 2 मामले पहले भी सामने आ चुके हैं। वीडियो सामने आने के बाद जिला शिक्षा अधिकारी जांच के बाद कार्रवाई की बात कह रहे हैं।छतरपुर के सरकारी स्कूलों में पदस्थ शिक्षक सरकार से वेतन तो पूरा लेते हैं लेकिन जब बच्चों को शिक्षा देने की बारी आती है तो कुछ शिक्षक अपनी जिम्मेदारी को छोड़ खर्राटे मारते दिखाई देते हैं। ऐसा ही एक वीडियो ग्राम पंचायत मोरवा के मारगुवां गांव के माध्यमिक स्कूल का सामने आया है। वीडियो में शिक्षक जगराम प्रजापति क्लासरूम में बच्चों की बेंच पर सोते हुए दिख दे रहे हैं। यह वीडियो स्थानीय ग्रामीणों ने बनाया गया है, जो शनिवार दोपहर 3 बजे का बताया जा रहा है। जब लंच के बाद बच्चे क्लास में नहीं पहुंचे तो शिक्षक वहीं सो गए। ग्रामीणों ने मौके पर पहुंचकर शिक्षक का वीडियो बना लिया और उसे सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया।गांव के ग्रामीणों ने चिंता जताई कि इस तरह के व्यवहार से बच्चों के भविष्य पर क्या असर पड़ेगा। स्थानीय निवासी छोटेलाल ने कहा जब शिक्षक स्कूल में सो जायेंगे तो निश्चित हमारे बच्चों का भविष्य खतरे में आ जायेगा। यही कारण है कि आज लोग सरकारी स्कूलों में बच्चों को पढ़ाना नहीं चाहते लेकिन क्या करें गरीबी के कारण मजबूरी रहती है।सरकार से मोटी सैलरी लेकर क्लास में सोने वाले यह कोई पहले शिक्षक नहीं है। जिले में इस तरह की यह तीसरी घटना है। इससे पहले 1 अगस्त को कांटी गांव के प्राथमिक स्कूल में एक शिक्षक को सोते हुए पाया गया था। जांच के बाद उन्हें निलंबित कर दिया गया था।

मध्य प्रदेश के 14 शहरों में बिकता है खरा सोना

सच प्रतिनिधि ॥ भोपाल

धन की देवी लक्ष्मीजी का त्योहार दीपावली और उसके पहले धनतेरस पर लोग खूब सोने की ज्वेलरी खरीदते हैं। सोने की शुद्धता को लेकर ग्राहक सिर्फ दुकानदार के भरोसे पर ही निर्भर रहता है। लेकिन यदि आप मध्य प्रदेश के 14 शहरों में सोने की ज्वेलरी खरीद रहे हैं, तो सोने में मिलावट को लेकर निश्चिंत रहें, क्योंकि प्रदेश के 14 शहरों में शुद्ध सोने की ज्वेलरी ही मिलती है। प्रदेश के 14 शहरों की ज्वेलरी शॉप्स पर सिर्फ हॉलमार्क ज्वेलरी ही बेची जा सकती है। इन शहरों में यदि कोई बिना हॉलमार्क की जवेलरी बेचता है और शिकायत मिलती है तो संबंधित के खिलाफ सख्त कार्रवाई के प्रावधान है।

भारतीय मानक ब्यूरो के भोपाल शाखा के निदेशक मोहम्मद रिजवान बताते हैं किभारतीय मानक ब्यूरो द्वारा 2021 से देश के 361 जिलों में हॉलमार्क ज्वेलरी की बिक्री की ही अनुमति दी गई है। इनमें मध्य प्रदेश के 14 जिले शामिल हैं, जहां सिर्फ हॉलमार्क ज्वेलरी की ही बिक्री की जा सकती है।

मध्य प्रदेश के 14 जिलों में भोपाल, इंदौर, उज्जैन, रतलाम, रीवा, सतना, देवास, छतरपुर, ग्वालियर, कटनी, जबलपुर, मुरैना, बालाघाट, छिंदवाड़ा जिले शामिल हैं। इन जिलों की किसी भी ज्वेलरी शॉप पर बिना हॉलमार्क की ज्वेलरी का विक्रय नहीं किया जा सकता।मोहम्मद रिजवान बताते हैं कि यदि कोई बिना हॉलमार्क ज्वेलरी का विक्रय करता है और उसकी शिकायत की जाती है, तो ऐसे ज्वेलर्स के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा सकती है। अमानक ज्वेलरी की बिक्री करते पाए जाने पर ज्वेलर्स के खिलाफ 1 लाख रुपए का जुर्माना और 6

माह तक की सजा का प्रावधान है।

भारतीय मानक ब्यूरो के भोपाल शाखा के निदेशक मोहम्मद रिजवान बताते हैं कि प्रदेश के 14 जिले में जो भी ज्वेलर्स सोने के आभूषण बेचता है, उसके पहले उसे बीआईएस सर्टिफाई कराना होता है। इसके लिए सभी आभूषणों को बीआईएस द्वारा मान्यता प्राप्त परख एवं हॉलमार्किंग केन्द्र को भेजे जाते हैं, जहां आभूषणों की जांच कर उस पर कैरेट के हिसाब से उसकी हॉलमार्किंग की जाती है। इसके लिए सोने के ज्वेलरी के प्रति पीस के लिए 45 रुपए का भुगतान करना होता है।

मोहम्मद रिजवान बताते हैं कि हॉलमार्क ज्वेलरी को लेकर ग्राहकों को भी जागरूक होना जरूरी है। ग्राहक को पता होना चाहिए कि हॉलमार्क ज्वेलरी को कैसे पहचाना जा सकता है। हॉलमार्क ज्वेलरी पर 3 निशान होते हैं, जिन्हें देखा जाना चाहिए। सबसे पहले ज्वेलरी पर बीआईएस का लोगो होता है। इसके बाद शुद्धता के चिन्ह के रूप में कैरेट लिखा होता है। जैसे 916 यानी 22 कैरेट या फिर कोई दूसरा नंबर। इसके बाद एचयूआईडी यानी अल्फान्यूमेरिक हॉलमार्क यूनिक आईडेंटिफिकेशन कोड अंकित होता है, जो 6 अंकों का होता है। किसी तरह की आशंका होने पर इसकी जांच मोबाइल से खुद ही की जा सकती है। इसके लिए बीआईएस का बीआईएस केयर एप डाउनलोड करें। इसमें एचयूआईडी कोड डालें। यह कोड डालते ही पता चल जाएगा कि ज्वेलरी पर लिखा गया कोड सही है या गलत। साथ ही ज्वेलरी पर लिखे कैरेट की भी जानकारी मिल जाएगी।

22 कैरेट यानी कितने फीसदी सोना शुद्ध?

हॉलमार्क के साथ अलग-अलग कैरेट के नंबर लिखे होते हैं। अब जरा इन्हें भी जान लीजिए कि किस नंबर का क्या मतलब होता है?

- 958 - इसका मतलब होता है 23 कैरेट यानि सोना 95.8 फीसदी तक शुद्ध है।
- 916 - इसका मतलब होता है 22 कैरेट यानि सोना 92.6 फीसदी तक शुद्ध है।
- 750 - इसका मतलब होता है 18 कैरेट यानि सोना 75 फीसदी तक शुद्ध है।
- 585 - इसका मतलब होता है 14 कैरेट यानि सोना 58.5 फीसदी तक शुद्ध है।

स्वाद के शौकीनों को सर्दियों के स्नेक्स का बेसब्री से इंतजार

सच संवाददाता ॥ रतलाम

सर्दी के मौसम में खाए जाने वाले स्नेक्स गराडू का सीजन आने में अभी देर है लेकिन रतलाम के बांगरोद में उगाए जाने वाले गराडू की मांग अभी से शुरू हो गई है। रतलाम की मिट्टी में उगाये जाने वाले एक विशेष कंदमूल की खेती यहां के बांगरोद और खेतलपुर में ही होती है। जिसमें बांगरोद के गराडू की डिमांड सबसे अधिक होती है।इस जमीकंद स्वाद के शौकीन सीधे यहां के किसानों से संपर्क कर गराडू की प्री-बुकिंग करवा रहे हैं। हालांकि इसके स्वाद के शौकीनों को अभी एक से दो महीने का इंतजार करना पड़ेगा। स्थानीय किसानों के अनुसार लोग उन्हें फोन पर पूछ रहे हैं कि गराडू कब निकलेंगे। वहीं, कुछ लोग एडवांस बुकिंग के लिए भी फोन कर रहे हैं।दरअसल सर्दी के मौसम में फ्राई कर खाए जाने वाले इस विशेष स्नेक्स की खेती केवल मालवा क्षेत्र में होती है। जिसमें ऊज्जैन और रतलाम जिले के कुछ ही गांवों में इसकी खेती बड़े स्तर पर की जाती है। बीते कुछ सालों में स्वाद के राजा गराडू की मांग दिल्ली, मुंबई और गुजरात के बड़े शहरों में भी होने लगी है। आमतौर पर सर्दियों का मौसम आते ही गराडू की डिमांड बढ़ जाती है। रतलाम, उज्जैन और इंदौर शहरों में इसके ठेले और दुकानें सज जाती हैं। हाई डिमांड में चल रहा यह जमीकंद शकरकंद की तरह ही होता है। गराडू को फरियाली नाश्ते और स्नेक्स के रूप में खाया जाता है। इसे फ्राई कर मसालों और नींबू के साथ खाया जाता है। सर्दी के मौसम में इसकी डिमांड सबसे हाई होती है। गराडू की खेती शकरकंद की तरह बेल लगाकर की जाती है। जमीन के अंदर कंद का आकार बढ़ा बने, इसके लिए इसकी बेल को विशेष तरीके से बांस और रस्सी का जाल बनाकर संभाला जाता है। करीब 5 महीने की मेहनत के बाद जमीन से गराडू का कंद निकाला जाता है।गराडू की खेती केवल मालवा क्षेत्र के कुछ ही गांवों में होती है। रतलाम में भी केवल बांगरोद और खेतलपुर 2 ऐसे गांव हैं जहां पर गराडू की खेती वृहद स्तर पर की जाती है। यहां की मिट्टी का ही असर कुछ ऐसा है कि यहां उगाए गए गराडू की डिमांड अधिक रहती है।बांगरोद गांव के किसान कन्हैयालाल मेहता ने बताया कि गराडू की फसल पकने में 5 महीने लगते हैं। अक्टूबर-नवंबर के महीने में मंडियों में बिकने के लिए पहुंचने लगती है।